Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 49-54

बदलते विश्व में भारत की विदेश नीति की दशा एवं दिशा

डॉ0 राजेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग
एस0डी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर उत्तर–प्रदेश भारत।

सार

भारत एक प्राचीन सभ्यता वाला राष्ट्र है जिसकी एक विविधतापूर्ण वैभवशाली सांस्कृतिक विरासत रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पिछले 68 वर्षों में भारत ने विकास के सभी क्षेत्रों में प्रशंसनीय सफलता अर्जित की है। भारत, जिसका क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी0 है, एशिया महाद्वीप का दक्षिण एशिया में एक विशाल राज्य है। भारत की भौगोलिक सीमा चीन, नेपाल, भूटान म्यांमार, बाग्लांदेश, श्रीलंका और पाकिस्तान जैसे देशों के साथ मिलती है।[1] भारत का स्थलीय विस्तार पूर्व से पश्चिम तक 2933 किमी0 तथा उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी0 है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड है।[2] भारत जैसे विशाल राज्य में 29 राज्य तथा 7 केन्द्रशासित प्रदेश है। भारत की स्थलीय सीमा 15200 किमी0 है।

मुख्य शब्द: विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, महाशक्तियां, आतंकवाद

विदेशनीति किसी भी सम्प्रभु राष्ट्र का एक ऐसा दस्तावेज या वक्तव्य होती है जो उस राष्ट्र के मूल्यों, विश्वासों, आदर्शों तथा उद्देश्यों को अभिव्यक्त करती है। किसी भी राष्ट्र के द्वारा प्राप्त किये जाने वाले उद्देश्य तथा मूल्य उस राष्ट्र के इतिहास, आदर्शों, सभ्यता तथा संस्कृति से जन्म लेते है। भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विरासत इस बात की मांग करती है कि भारत राष्ट्र के व्यापक एवं दीर्घकालीन राष्ट्रीय हितों की रक्षा की जानी चाहिए तथा राष्ट्र के गौरव व विशालता की निरन्तरता को भी बनाये रखा जाना चाहिये। मार्च 1950 में विदेश नीति के संबंध में लोकसभा में भाषण देते हुए पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि, ''यहीं नही समझा जाना चाहिए कि हम विदेशनीति के क्षेत्र में एकदम नई शुरूआत कर रहे है। भारत की विदेशनीति इस संबंध में एकदम स्पष्ट है। यह एक ऐसी नीति है जो हमारे अतीत के इतिहास से और हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित है। इसका विकास उन सिद्धान्तों के अनुसार हुआ है जिनकी घोषणा अतीत में हम समय–समय पर करते रहे है।''[3] स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 68 वर्षों की इस अवधि में भारत ने अपने विदेशी संबंधों का संचालन किस प्रकार किया है इस पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार तथा विश्लेषण करनें का यह अच्छा समय है। 21वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में विश्व में व्यापक परिवर्तन हुए है। अमेरिका पर आतंकी हमला 9/11, 2001 तथा विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी ने भारत तथा विश्व के आपसी सम्बन्धों को बहुत अधिक प्रभावित किया है। इसी के परिप्रेक्ष्य में भारत ने भी अपनी विदेशनीति के संचालन में समसामयिक परिवर्तन किये है, जिससे भारत अपनें व्यापक राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सके। भारत की विदेशनीति के निर्माण की प्रक्रिया स्वतंत्रता की प्राप्ति से पूर्व ही प्रारम्भ हो गयी थी। स्वतंत्रता की प्राप्ति तक भारत की विदेशनीति राज्यों की स्वतंत्रता की प्राप्ति तक भारत की विदेशनीति राज्यों की स्वतंत्रता, समानता, साम्राज्यवादी शोषण का अन्त तथा स्वशासन के अधिकारों की प्राप्ति जैसे मूल्यों पर आधारित थी। इस अवधि में महात्मा गांधी के विचारों व आदर्शों ने जहां विदेश नीति को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वहीं पंडित नेहरू ने अपने विचारों व सिद्धान्तों से विदेशनीति को प्रभावी एवं स्पष्ट दिशा प्रदान की।

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विदेश नीति के निर्माण की प्रक्रिया में पंडित जवाहर लाल नेहरू के विदेश नीति सम्बन्धी विचारों पर गांधीवादी तथा समाजवादी दोनों विचारधाराओं का प्रभाव पडा। इसी प्रभाव के अन्तर्गत अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में भी राज्यों की आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व राजनीतिक स्वतंत्रता को अनिवार्य रूप से मान्यता दी गयी तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी प्रकार के शोषण का विरोध किया गया। विदेशी सम्बन्धों के विषय में भारत की एक नैतिक विरासत एवं परम्परा रही है। इसी विरासत व परम्परा को मूर्त रूप देने के लिये भारत ने सहिष्णुता, अनाक्रामक्ता तथा विवादों के शान्तिपूर्ण समाधान जैसे आदर्शों को आत्मसात किया तथा विश्वशान्ति को बढ़ावा देने तथा अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों में विस्तारवादी व शोषण की नीति का विरोध किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने सत्य, अहिंसा व न्याय पर आधारिक विदेशनीति के निर्माण की प्रक्रिया को आरम्भ किया तथा उस समय शीतयुद्ध में उलझी महाशक्तियों की आक्रामक सैन्य नीतियों व आपसी शत्रुता का भी भारत ने तीव्र विरोध किया। भारत ने

स्वंय अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति के लिये आक्रामक व शोषण पर आधारित राजनीतिक–आर्थिक शक्ति की प्राप्ति का कभी कोई प्रयास नहीं किया। यद्यपि इस नीति के परिणास्वरूप भारत को चीन के हाथों 1962 में शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा। भारत ने स्वंय अपनी स्वतंत्रता सत्य व अहिंसात्मक संघर्ष से प्राप्त की तथा विश्व के अन्य देशों की स्वतंत्रता के लिये भी आवाज बुलन्द की। भारत के इन्हीं प्रयासों से दुनिया के अनेक राष्ट्रों से उपनिवेशवादी तथा साम्राज्यवादी शासन का अन्त हुआ जिसके परिणामस्वरूप एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका के अनेक पराधीन देशों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

भारतीय विदेशनीति के विकास एवं निर्माण की प्रक्रिया कुछ प्रमुख चरणों से होकर गुजरी है। सन् 1947 से लेकर 1990–91 की अवधि में भारत ने अनेक समस्याओं का कुशलतापूर्वक सामना किया है। इन प्रमुख समस्याओं में हैदराबाद, जूनागढ़ व कश्मीर जैसी रियासतों का भारत में विलय तथा जम्मू–कश्मीर में 1947–48 में पाकिस्तानी घुसपैठ शामिल रही है। दो महाशक्तियों अमेरिका व सोवियत संघ के बीच शीतयुद्ध की तीव्रता में भी स्वतंत्र विदेशनीति का संचालन भारत ने कुशलतापूर्वक किया तथा अपने दो प्रमुख पड़ोसी देशों, चीन तथा पाकिस्तान के साथ भी अपने सम्बन्धों को बनाकर रखा। भारत ने अपनी विदेशनीति के माध्यम से इन सभी समस्याओं से निपटने के लिये जहां गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया वहीं अपनी सम्प्रभुता की रक्षा हेतु राजनीतिक एवं सैन्य उपाय भी किये। इस अवधि में भारत ने न केवल सुरक्षा परिषद में चीन के प्रवेश का समर्थन किया वरन् तिब्बत के सम्बन्ध में भी शान्तिपूर्ण व्यवहार का परिचय दिया। इसके साथ–साथ नव स्वतंत्रता प्राप्त देशों की स्वतंत्रता की रक्षा का प्रयास किया तथा इन विकासशील देशों की समस्याओं के समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर इन देशों की आवाज बुलन्द की। तृतीय विश्व के इन राष्ट्रों की राजनीतिक व आर्थिक स्वतंत्रता की रक्षा हेतु इन्हें आर्थिक व तकनीकी सहायता भी भारत ने प्रदान की।

इसी समय में यथार्थ पर आधारित भारत केन्द्रित विदेशनीति को नया आयाम दिया गया। भारत की प्रतिरक्षा व तकनीकी सम्बन्धी क्षमताओं को बढ़ानें का प्रयास भारत के विदेश नीति निर्माताओं द्वारा किया गया तथा 1974 में शान्तिपूर्ण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये बदलते भू–राजनीतिक वातावरण में परमाणु परीक्षण किया, लेकिन पड़ोसी देशों को विश्वास दिलाया गया कि भारत का यह परमाणु परीक्षण उनके या दूसरे देशों के विरूद्ध नहीं है, और न ही भारत का कोई आक्रामक या विस्तारवादी विदेश नीति का इरादा है। यह परमाणु शक्ति परीक्षण भारतीय उपमहाद्वीप में बदलते भू–राजनीतिक वातावरण का परिणाम है।

बीसवीं शताब्दी के आखिरी दशक में अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति में तेजी के साथ व्यापक परिवर्तन हुए। इस बदले हुए अर्न्तराष्ट्रीय वातावरण में भारत ने अपनी विदेशनीति के माध्यम से न केवल अपनें राष्ट्रीय हितों की रक्षा की बल्कि अर्न्तराष्ट्रीय संबंधों में स्वतन्त्रता, समानता तथा शोषण मुक्त अर्न्तराष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण का भी प्रयास किया। शीत युद्ध के अंत तथा सोवियत संघ के पतन के पश्चात् भारतीय विदेश नीति में व्यापक परिवर्तन हुए। इसी परिप्रेक्ष्य में गुटनिरपेक्षता की नीति की प्रासांगिकता की नवीन दृष्टिकोण से व्याख्या की गयी तथा भारत ने रूस पर अपनी निर्भरता को छोड़कर अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा हेतु विश्व के प्रमुख शक्तिशाली देशों के साथ अपने संबंधों का पुनर्निर्धारण किया। 21वीं शताब्दी में सूचना क्रान्ति के विस्तार तथा भू–मण्डलीकरण के कारण भारत के लिये यह आवश्यक हो गया कि वह अपनी विदेश नीति का निर्धारण अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में करे। शीतयुद्ध के अन्त ने एक ध्रुवीय विश्व की स्थापना की तथा मानव अधिकार, विश्वव्यापार, पर्यावरण संरक्षण जैसे प्रश्न अर्न्तराष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था में शक्तिशाली देशों के द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा हेतु प्रमुखता से उठायें जाने लगे। शीत युद्ध के अंत के पश्चात् अनेक क्षेत्रीय गठबंधनों व सामरिक राजनीतिक समूहों के संदर्भ में भारत को अपनी विदेशनीति को पुनः परिभाषित करना पडा तथा विश्व के नये शक्ति केन्द्रों–अमरीका, पश्चिमी यूरोप, जापान, चीन, रूस तथा आसियान देशों के साथ अपने संबंधों का नये दृष्टिकोण से निर्धारण करना पड़ा। नवीन शक्ति समीकरणों के परिप्रेक्ष्य में भारत ने विभिन्न देशों के साथ अपनी रक्षा व आर्थिक नीतियों में यथोचित परिवर्तन किये तथा अपने पडोसी देशों में अनिश्चित, अस्थिर राजनीतिक स्थिति का कुशलतापूर्वक सामना किया।

11 सितम्बर 2001 की अमेरिका की आतंकवादी घटना के पश्चात् भारत की संसद पर आतंकवादियों ने 13 दिसम्बर 2001 को सुनियोजित तरीके से हमला किया। इस अवधि में राज्य–प्रायोजित आतंकवाद का स्वरूप और जटिल हो गया तथा इसी क्रम में 26 नवम्बर 2008 में भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई पर एक और आतंकवादी आक्रमण हुआ। इन सभी घटनाओं के सन्दर्भ में भारत ने अपनी कूटनीति के कुशल संचालन से अपराधियों को दण्डित कराने की पूरी कोशिश की जिसमें भारत काफी हद तक सफल हुआ है। सीमा पार से प्रायोजित आतंकी हिंसा की

चपेट में लगभग समस्त भारत आ गया है। देश के अनेक हिस्सों में आतंकवादी व नक्सलवादी दहशत फैलानें में सफल हो रहे है। यद्यपि भारत सरकार के प्रयासों से जम्मू–कश्मीर में शान्ति स्थापित हुई है लेकिन अभी तक आतंकी घटनाओं के ऊपर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित नहीं हो पाया है। आतंकवादी भारत के अंदर हर कीमत पर आतंक व दहशत को फैलाना चाहते है जिसकी पुष्टि जम्मू–कश्मीर के संदर्भ में निम्न सारणी करती है।[4]

वर्ष	घटनाएं	घुसपैठ
2001	4522	2417
2002	4038	1504
2003	3401	1373
2004	2565	537
2005	1990	597
2006	1667	573
2007	887	535

इन घटनाओं के अतिरिक्त वर्तमान समय में देश के 13 राज्य आंशिक या पूर्ण रूप से वामपंथी, नक्सली हिंसा की चपेट में है। इनमें छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, उडीसा, पश्चिम बंगाल सबसे अधिक प्रभावित राज्य है। इन राज्यों में प्रतिबन्धित नक्सली संगठन पीपुल्स वॉर ग्रुप तथा एम0सी0सी0 का प्रभाव व दबदबा है तथा ये संगठन इन राज्यों में समानान्तर सरकार चला रहे है। इन संगठनों द्वारा की जाने वाली हिंसा से अनेक लोगों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी है। निम्न सारणी इन तथ्यों की पुष्टि करती है।[5]

नक्सली हिंसा का परिणाम	2002	2003	2004	2005	2005
मारे गये नक्सलवादी	141	216	87	223	272
मारे गये पुलिसकर्मी	100	105	100	153	157
मारे गये नागरिक	382	410	466	516	521
घटने वाली घटनाएं	1465	1597	1533	1594	1509

इस समस्या के अतिरिक्त भारत–चीन सीमा विवाद भी पिछले छः दशकों से भारतीय विदेशनीति की एक प्रमुख चुनौती रहा है। चीन ने धोखे से 1956 में जम्मू कश्मीर का 43180 वर्ग किमी0 का क्षेत्र बलपूर्वक कब्जा लिया है। इसके बाद 1963 में पाकिस्तान ने अपने नियन्त्रण वाले कश्मीर का 5180 वर्ग किमी0 का क्षेत्र चीन को भेंट कर दिया। इन गैरकानूनी नियन्त्रण के अतिरिक्त चीन भारतीय प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश के लगभग 90,000 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर भी अपना अधिकार जताता है। इसी क्रम में वर्ष 2009 में भारतीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह की अरूणाचल प्रदेश की यात्रा का भी चीन में तीव्र विरोध किया। चीन के साथ सीमा संबंधी विवाद को हल करने के लिये यद्यपि वार्ता के 16–17 दौर हो चुके है परन्तु इन वार्ताओं से कोई ठोस परिणाम आज तक नहीं निकला। एशिया में अपनी सर्वोच्चता स्थापित करने के लिये भारत की घेराबंदी करने की रणनीति के तहत चीन, नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा म्यांमार में अपनी सक्रियता बढा रहा है। इसी नीति के अन्तर्गत चीन ने मार्च 2010 में श्रीलंका को अरबों डॉलर की सहायता भी प्रदान की है। अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि करने हेतु चीन हिन्द महासागर के तटवर्ती देशों में अपने नौसैनिक अड्डों की स्थापना के लिये भी सक्रिय रूप से प्रयास कर रहा है जिससे भारत की इस क्षेत्र में बढ़ती शक्ति व भूमिका को सीमित किया जा सके।

1970 के दशक के प्रारम्भ में कुछ वर्षों को यदि हम अलग कर दें तो, पिछले वर्षों में पडौसी देश बांग्लादेश के साथ विदेशी संबंधों को लेकर भी भारत की विदेशनीति के संचालकों को आपसी संबंध सामान्य करने के लिये काफी परिश्रम करना पड़ा है। एक अनुमान के अनुसार करीब डेढ–दो करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठियों ने अवैध रूप से भारत में अपना निवास बना रखा है। आई0बी0 ने अपनी 38वीं कान्फ्रेंस में बांग्लादेश से होने वाली इस घुसपैठ को भारत की सुरक्षा व एकता के लिये एक गम्भीर खतरा बताया है। इस रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1.5 करोड बांग्लादेशी अवैध रूप से भारत में रह रहे है जिसमें करीब 80 लाख पश्चिम बंगाल में तथा 50 लाख असम में उपस्थित है। इसी प्रकार नागालैण्ड, मिजोरम, बिहार तथा दिल्ली में भी बांग्लादेशी अवैध रूप से रह रहे है। जनवरी 2010 में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री श्रीमति शेख हसीना वाजेद की भारत की यात्रा के दौरान इन सभी विवादों पर विस्तार से चर्चा की गयी। इन सभी विवादों के शान्तिपूर्ण समाधान का आश्वासन भारत को बांग्लादेश की प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया। इसी संबंधों में सुधार की प्रक्रिया के तहत बांग्लादेश ने अपनी भूमि से चलने वाले विभिन्न आतंकवादी संगठनों–उल्फा, Muslim United Liberation Tigers of Assam, N.D.B.F., N.C.N. (I.M.) के कैम्पों को समाप्त करने के लिये ठोस तथा प्रभावी कार्यवाही की है।[6] बांग्लादेश की प्रधानमंत्री श्रीमति शेख हसीना वाजेद की भारत की इस यात्रा के दौरान भारत ने बांग्लादेश को करीब पांच हजार करोड़ रू0. का ऋण देने का फैसला किया जो वहां की अर्थव्यवस्था के विकास में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। बांग्लादेश की स्थिरता व शान्ति भारत के विकास हेतु आवश्यक है। आर्थिक सहायता

द्वारा सुरक्षा को मजबूत करना कूटनीति का एक हिस्सा होता है इसीलिये भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा हेतु यह कदम उठाया है।[7]

नेपाल के साथ विदेशी सम्बन्धों का कुशल संचालन भारतीय विदेशनीति की एक प्रमुख चुनौती रही है। 1947 से लेकर आज तक भारत–नेपाल सम्बन्धों में काफी उतार–चढ़ाव रहा है। भारत की करीब 1860 किमी0 की सीमा नेपाल के साथ लगी है। उत्तराखण्ड के चार, उत्तर प्रदेश के छः, बिहार के सात, सिक्किम के दो, तथा पश्चिम बंगाल के एक जिले के साथ नेपाल के 27 जिले सम्बद्ध है।[8] भारत व नेपाल के बीच शुरू से ही नागरिकों के मुक्त आवागमन की सुविधा दोनों देशों के नागरिकों को प्राप्त रही है। इसी खुली सीमा का लाभ उठाकर पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी, आई0एस0आई0 माओवादियों व आतंकवादियों का प्रयोग भारत की एकता व अखण्डता को कमजोर करने के लिये कर रही है। माओवादियों ने नेपाल से लेकर आन्ध्र प्रदेश तक एक लाल गलियारा बना लिया है जो भारत की एकता व अखण्डता के लिये एक गंभीर चुनौती पेश कर रहा है। आई0एस0आई0 पथभ्रष्ट युवकों को प्रशिक्षण देकर भारत में हिंसा करने के लिये भेज रही है। भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के कुछ जिलों की स्थिति तो इतनी खराब है कि वहां के जिला अधिकारी भी निसंकोच स्वीकार करते है कि यहां इनका शासन ना के बराबर है। भारत के 626 जिलों में से लगभग 210 जिलों के जिलाधिकारी असहाय स्थिति में यही बात स्वीकार करते है।[9]

इस प्रकार पिछले 68 वर्षों में भारत की विदेशनीति को अनेक चुनौतियों का सामना करना पडा है। प्रारम्भ में जहां भारतीय विदेशनीति आदर्शवाद पर आधारित थी वहीं सोवियत संघ के विघटन (1990–91) के पश्चात् भारत ने अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों के संचालन में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने कश्मीर की समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से हल करना चाहा तथा अपने राष्ट्रीय हितों के लिये ही तिब्बत के प्रश्न पर चीन के दृष्टिकोण को चुपचाप स्वीकार कर लिया। इसका परिणाम 1962 में चीन के हाथों भारत की पराजय के रूप में सामने आया। इसी अवधि में अमरीका व सोवियत संघ ने भारत को 1955 में संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की पेशकश की थी जिसे पं0 जवाहर लाल नेहरू ने यह कहते हुए लेने से मना कर दिया कि इस सदस्यता का असली हकदार तो चीन है।[10] आज वही साम्यवादी चीन भारत को अपना सबसे बडा शत्रु समझता है तथा भारत को डराने व कमजोर करने के लिये भारत के पडौसी देशों में अपनी सक्रियता बढ़ा रहा है। आज यही चीन भारत को परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में प्रवेश तथा सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता मिलने का पुरजोर विरोध कर रहा है तथा पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत के विरूद्ध एक शक्तिशाली गठबंधन बनाने का प्रयास कर रहा है।

यद्यपि भारतीय विदेशनीति स्वतंत्रता की प्राप्ति के प्रारम्भिक वर्षों में राष्ट्रीय हितों की रक्षा में पूर्णतया सफल नहीं रही लेकिन सोवियत विघटन के पश्चात् अर्न्तराष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था में आये परिवर्तनों में अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। अनेक बाहरी व आन्तरिक दबावों के बाद भी भारत अपनी एकता व अखण्डता की रक्षा करने में सफल रहा है। इस अवधि में सीमापार आतंकवाद, अलगाववाद, आर्थिक, व्यापारिक हितों जैसे प्रश्नों पर भारत ने यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया है। इसके लिये भारत ने अपने पडोसी देशों में शान्ति व लोकतंत्र स्थापित करने का प्रयास किया तथा विश्व की प्रमुख समस्याओं–मानव अधिकारों का संरक्षण, विश्वव्यापी आतंकवाद, भू–मण्डल का बढता तापमान, पर्यावरण की सुरक्षा, संयुक्त राष्ट्र संघ में सुधार तथा न्यायपूर्ण नई विश्व व्यवस्था की स्थापना–के हल के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहा है। अपने पडोसी देशों की समस्याओं के सम्बन्ध में भारत ने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखकर यथार्थवादी व संतुलित दृष्टिकोण अपनाया है। अपने पडोसी देशों के संबंध में भारत का यही दृष्टिकोण रहा है कि इन देशों में शान्ति तथा लोकतंत्र की स्थापना हो जिससे ये देश भी अपना आर्थिक–सामाजिक विकास कर सकें। यही विकास आतंकवाद तथा कट्टरवाद को बढने से रोकने में सफल होगा। इसके लिये भारत ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिये अफगानिस्तान को आर्थिक व तकनीकी मदद प्रदान की है तथा इस देश में आधारभूत संरचना के निर्माण के लिये सक्रिय भूमिका निभा रहा है। यद्यपि तालिबान के द्वारा यहां कार्य कर रहे भारतीयों पर लगातार हमलें किये जा रहे है।

जहां तक प्रश्न भारत–पाकिस्तान के आपसी सम्बन्धों का है तो भारत का हमेशा से ही यह प्रयास रहा है कि पाकिस्तान की राजनीति में स्थिरता आये तथा आर्थिक विकास के साथ–साथ वहां पर लोकतन्त्र भी सुदृढ़ हो लेकिन पाकिस्तान की तरफ से इन प्रयासों का कभी भी कोई सार्थक जवाब नहीं आया। पिछले 68 वर्षों में दोनों पडोसी राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों में कभी मधुरता नहीं आयी। यद्यपि ट्रैक–2 कूटनीति के द्वारा संबंधों में सुधार के प्रयास लगातार हो रहे है। इन वार्ताओं में सीमापार आतंकवाद, जम्मू–कश्मीर, जल संबंधी विवाद, अफगानिस्तान में शान्ति तथा परमाणु सुरक्षा जैसे प्रश्नों पर विस्तार से विचार किया

गया है।[11] इन वार्ताओं में इस बात को स्वीकार किया गया है कि एक स्थिर, आर्थिक रूप से सशक्त तथा स्वतंत्र अफगानिस्तान भारत–पाक दोनों के हितों की रक्षा के लिये आवश्यक है। इसलियें दोनों का यह प्रयास होना चाहिये कि अफगानिस्तान में स्थिरता, आर्थिक विकास व शान्ति की स्थापना हो।

इसी प्रकार का दृष्टिकोण भारत ने नेपाल तथा श्रीलंका के संबंध में भी अपनाया है। यद्यपि भारत ने म्यांमार के साथ आर्थिक–व्यापारिक संबंधों की स्थापना की है लेकिन फिर भी भारत वहां लोकतन्त्र की स्थापना के साथ ही लोकतंत्र समर्थक प्रमुख नेता आंग सान सू की की रिहाई की भी मांग करता रहा।

इस प्रकार अनेक आतंरिक व बाहरी दबावों के बाद भी भारत अपनी स्वतंत्र व शान्तिप्रिय विदेशनीति पर स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर आज तक अडिग रहा है। समय चाहे शीतयुद्ध का रहा हो या शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद का पिछले 6–7 दशकों में भारत विश्व के सभी प्रमुख शक्ति केन्द्रों के साथ अपने अच्छे संबंध बनाये रखने में सफल रहा है। अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा हेतु जहां भारत ने अमेरिका तथा पश्चिमी देशों के साथ अपने अच्छे संबंधों की स्थापना की है वहीं पूर्वी एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, मध्यपूर्व, मध्य एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका के देशों के साथ भी सुदृढ़ आर्थिक राजनीतिक संबंधों का विकास किया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के और अधिक लोकतांत्रिक होने का भी समर्थन किया है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में विश्व की प्रमुख समस्याओं के समाधान का आह्वान किया है। अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा हेतु भारत ने विश्व के अन्य देशों के साथ भी अपने संबंधों का पुनर्निर्धारण किया है। इस क्रम में भारत ने अमेरिका के साथ 18 जुलाई 2005 को परमाणु समझौता किया। इस समझौते के अन्तर्गत अमेरिका भारत को असैनिक कार्यों के लिये नाभिकीय तकनीक प्रदान करेगा जिसका उपयोग भारत अपने आर्थिक, सामाजिक विकास हेतु करेगा। अपनी ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं के लिये भारत ने रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान आदि देशों के साथ भी इसी प्रकार के समझौते किये है। भारत ने आशियान, E.A.S., BIMSTAC, IBSA, G-8, G-15 तथा BRICS जैसे संगठनों के साथ मिलकर अपनी अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ जोडने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त न्याय पर आधारित सशक्त अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण के लिये भारत हमेशा प्रयत्नशील रहा है। प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने स्वंय आठवीं भारत–आशियान शिखर वार्ता का नेतृत्व किया तथा भारतीय प्रधानमंत्री ने अक्टूबर 2007 में प्रिटोरिया में होने वाली IBSA की शिखर वार्ता में भी भाग लिया।[12]

मार्च 2010 में सम्पन्न होने वाली रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा ने दोनों देशों के आपसी संबंधों को नया आयाम दिया है। इस यात्रा के दौरान हुए समझौतों ने दोनों राष्ट्रों को सच्चा सामारिक मित्र बना दिया है। रूस भारत में न केवल दर्जनभर परमाणु संयंत्र लगायेंगा बल्कि परमाणु ईंधन के पुनः संशोधन की भी सुविधा प्रदान करेगा। रूस भारत को अपने सखालिन द्वीप समूह क्षेत्र में तेल निकालनें की नई सुविधाएं भी प्रदान करेगा।[13] ये सभी भारत के प्रयास भारत की विदेशनीति को एक नया आयाम प्रदान करेंगे तथा भारत अपनी ऊर्जा संबंधी जरूरतों को पूर्ण करने में सफल होगा। इस प्रकार भारतीय विदेशनीति विगत वर्षों में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा में ज्यादातर सफल रही है लेकिन अब समय आ गया है कि भारत अपनी विदेश नीति को और अधिक प्रभावी बनाए। इस संबंध में भारत को अपने पड़ोसी देशों के प्रति अपनी विदेशनीति पर एक बार पुनर्विचार करना चाहिये। भारत के पडोसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल तथा श्रीलंका–एक तरह से असफल राष्ट्र के स्तर को प्राप्त कर रहे है। इसीलिये भारत का यह प्रयास होना चाहिये कि ये सभी अपनी समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान करें। इस कार्य में भारत को सक्रिय भूमिका का निर्वाह करना होगा तभी भारत दक्षिण एशिया में बडे भाई की भूमिका का ठीक से निर्वाह कर पायेगा। यदि भारत ऐसा नहीं करता है तो पडोसी देशों की अस्थिरता व पिछडापन भारत की सुरक्षा एवं विकास पर विपरीत प्रभाव डालेगा। अपने पडोस में अस्थिरता एवं विकास की समस्या से निपटने की भारत की क्षमता ही आखिर में भारत को विश्व शक्ति का स्तर प्रदान करेगी तथा पश्चिमी देश विश्व की प्रमुख समस्याओं के समाधान में भारत को अनदेखा करने की नीति का परित्याग करेंगे। साथ ही भारत की चिन्ताओं को गम्भीरता से लेना प्रारम्भ करेंगे।

इसीलिये यह आवश्यक है कि भारत अपनी एकता व अखण्डता की दृढ़ता से रक्षा करें तथा विघटनकारी व अलगाववादी शक्तियों का कठोरता के साथ दमन करें। किसी भी देश की विदेशनीति की सफलता उस देश की राष्ट्रीय शक्ति के ऊपर निर्भर करती है। इसीलिये इन सभी चुनौतियों को ध्यान में रखकर भारत को अपने विदेशी संबंधों का विकास व संचालन करना चाहिये। यही आने वाले समय में भारत की विदेशनीति की सफलता का आधार होगा।

संदर्भ सूची

1. India – 2009, Pub. Division, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India, New Delhi, Page – 1.
2. दैनिक जागरण, 1 अप्रैल 2011।
3. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, डॉ0 मथुरालाल शर्मा, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर। नई दिल्ली, पेज–204।
4. दैनिक जागरण, 21 मई 2008।
5. गृहमंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट, 2005–06।
6. अमर उजाला, 24 फरवरी 2007।
7. दैनिक जागरण, 14 जनवरी 2010।
8. दैनिक जागरण, 08 जनवरी, 2008।
9. दैनिक जागरण, 17 मार्च 2010।
10. दैनिक जागरण, 14 जनवरी, 2010।
11. The Hindu, 15 Feb. 2010.
12. India–2009, Pub. Division, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India, New Delhi, Page – 545.
13. दैनिक हिन्दुस्तान, 16 मार्च 2010।